मीरजापुर के इतिहास में पण्डित राम गरीब चौबे की भूमिका

पण्डित रामगरीब चौबे का जन्म मीरजापुर के गोपालपुर गांव में हुआ था। इन्होंने अपनी शिक्षा प्रेसिडेंसी कालेज कलकत्ता से पूर्ण किया। बेरोजगारी के अभाव में चौबे जी आचार्य रामचंद्र शुक्ल के पिता चन्द्रबली शुक्ल के घर पर ही रहते थे। मीरजापुर में चन्द्रबली शुक्ल स्थानीय अदालत में सदर क़ानूनगो के पद पर कार्यरत थे। उनका घर लेखकों और बुद्धिजीवियों का जमावड़ा था, और उनके बेटे राम चंद्र शुक्ल को राम ग़रीब चौबे ने पढ़ाया था। रामचन्द्र शुक्ल बाद में हिंदी साहित्य के इतिहास की व्यापक संकल्पना करने वाले पहले इतिहासकार बने। रामचन्द्र शुक्ल, रामगरीब चौबे के बारे में कहते हैं कि वह सुबह दो या तीन बजे तक पढ़ते-लिखते, फिर पाँच बजे उठकर फिर से शुरू कर देते। उन्नीसवीं सदी के अंत तक, चौबे का पढ़ना और लिखना एक जुनून बन गया था।

औपनिवेशिक भारत के प्रबुद्ध सिविल अधिकारी विलियम क्रुक को जनजाति इतिहास, परंपरा एवं संस्कृति के बारे में खोजबीन करने का कार्य दिया गया। तब विलियम क्रुक को एक ऐसे व्यक्ति की तलाश थी, जो उन्हें स्थानीय ज्ञान,

परम्परा, जाति व धर्म के बारे

में जमीनी ठेठ जानकारी दे सके। कुछ स्थानीय व्यक्तियों द्वारा विलियम क्रुक को राम गरीब चौबे का नाम सुझाया गया। क्रुक महोदय ने तुरंत उनको बुलवाया। क्रुक को उस समय किसी सहायक नहीं बल्कि एक सहयोगी की जरूरत थी। राम गरीब चौबे इस पैमाने पर एकदम खरे उतरे। क्रुक के साथ काम करते हुए राम गरीब चौबे ने नोट्स एवं क्वेरीज़ नामक सीरीज पर काम किया। इसके बाद मूल संग्राहक, अनुवादक, स्थानीय रीति- रिवाज, लोक संस्कृति को समाहित करते हुए क्रुक के 1894 में प्रकाशित कार्य 'पोपुलर रिलीजन एवं फोकलोर' में सहयोग दिया। 1896 में विलियम क्रुक के प्रमुख कार्य 'ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ़ द नार्थ वेस्टर्न प्रोविंसेज' में सहयोग दिया। विन्ध्य क्षेत्र मीरजापुर की जनजातियों, मान्यताओं, जाति व्यवस्था, धर्म-रीतिरिवाजों पर लिखित यह पुस्तक काफ़ी महत्वपूर्ण है। क्रुक ने ऐतिहासिक नैतिकता के अभाव में केवल दो फूटनोट में ही राम गरीब चौबे का उल्लेख किया है।

पंडित राम ग़रीब चौबे और विलियम क्रुक के बीच संबंध 1896 में एक तरह से समाप्त हो गए थे। विलियम क्रुक इंग्लैंड वापस चले गए और एक विद्वान के रूप में, लोकगीत सोसायटी के सदस्य के रूप में और भारत पर कई पुस्तकों के संपादक के रूप में काम करते रहे। सेवानिवृत्ति के बाद उनका

पहला प्रमुख कार्य, थिंग्स

इंडियन, 1906 में प्रकाशित हुआ। वर्ष '1911-1912' तक फ़ोकलोर सोसाइटी के अध्यक्ष रहे, और 1915 से 1923 में अपनी मृत्यु तक इसकी पत्रिका, फ़ोकलोर के संपादक रहे। रॉयल के एक सदस्य एंथ्रोपोलॉजिकल सोसायटी और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने वाले, उन्हें ब्रिटिश अकादमी का सदस्य भी नियुक्त किया गया।

क्रुक के भारत से प्रस्थान के बाद के वर्षों में उनके खतों से ज्ञात होता है कि पंडित राम ग़रीब चौबे ने इतिहासकार वी. ए. स्मिथ की जो क्रुक के कॉलेज के सहपाठी थे और बाद में भारतीय सिविल सेवा में उनके सहयोगी भी थे उनकी विभिन्न तरीकों से मदद की थी। चौबे जी ने जी. ए. ग्रियर्सन की परियोजना, लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया के लिए काम किया, जिसे तब जॉर्ज ए. ग्रियर्सन द्वारा चलाया जा रहा था, जो स्मिथ की तरह क्रुक के मित्र और सहयोगी थे। हालाँकि, 1900 तक स्मिथ भी इंग्लैंड वापस चले गए थे, ग्रियर्सन की परियोजना समाप्त हो गई थी, और चौबे अपने गाँव गोपालपुर में बेरोजगार थे।

राम गरीब चौबे का पारंपरिक ज्ञान इस नए पश्चिमी शिक्षा प्रतिमान में व्यवस्थित हो गया था। औपनिवेशिक समाज की सत्ता संरचनाओं में वह एक बाबू, एक सैनिक, एक सुधारवादी, एक वकील, या एक

प्रारंभिक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में नहीं, बल्कि एक विद्वान के रूप में रहना और काम करना चाहते थे । विलियम क्रुक की ज्यादेतर पांडुलिपियों के लेखन शैली में मिश्रण है। इससे यह स्पष्ट होता है कि क्रुक महोदय के कार्य अकेले का किया कार्य नहीं था। फिर भी यह सवाल उठता है कि क्रुक महोदय ने राम गरीब चौबे के कार्यों का उचित सम्मान उन्हें नहीं दिया! एक लोककथाकार, स्थानीय विषय विशेषज्ञ राम गरीब चौबे का मीरजापुर के जनजाति इतिहास में उनके योगदानों को भले आज लिखित रूप से कोई पहचान प्राप्त नहीं हो सका लेकिन इतिहास अपने स्मरणों में उनके योगदानों को सदैव सम्मान की दृष्टि से देखेगा।

-प्रवीण कुमार मिश्र 'वशिष्ठ'